**Vijendra**

ABSTRACT

KEYWORDS-

द्वारा प्रेम विरह के सन्देश प्रेषित करने
के उदाहरण मिलते हैं। वाल्मीकि ने रामायण
में हनुमानजी को “दूत ” बनाकर भेजने का स्पष्ट
उल्लेख किया है।

दूत का कर्तव्य है कि वह जल्द से जल्द स्वामी
का सन्देश निर्देशानुसार पहुँचावे जिससे उस
सन्देश का सार्थक प्रयोजन सिद्ध हो सके।
किन्तु जब मैंने मेघदूत का अध्ययन किया तो
पाया कि कालिदास ने अपनी ही नायिका के प्रति
इतनी क्रूरता और अन्याय क्यों किया,
चिन्तनीय है। कालिदास सिद्धान्ततः तो आदर्श
प्रेम का कथन करते हैं, किन्तु मार्ग वर्णन के
ब्याज से यक्ष ने विहार और विलास जो किया है,
उसमें एक भी दूत के उपर्युक्त लक्षण नहीं
मिलते। अतः मैं - मार्ग वर्णन और अलका वर्णन
को प्रबंध की दृष्टि से असंगत मानता हूँ तथा
कालिदास को अपनी खण्डिता पत्नी के प्रति
संवेदन क्यों नहीं ?

सारांश

मानवीय दृष्टि से मेघदूत में अवश्य ही घनघोर
असंगतियाँ हैं। कहां तो विरहिणी प्रिया के
प्राणों की रक्षा हेतु अतीवत्वरा और कहां हर
जगह विश्राम , विहार और विलासों के द्वारा
अतीव विलम्ब करना। यही नहीं प्रमाण के
अनुरूप सरल सीधा पथ बताने की प्रतिज्ञा करके
भी विरही , प्रयाण के प्रतिरूप वक्रपथ से मेघ
को विदिशा , उज्जयिनी , दशपुर , विहार विलास का
निर्देश देता है। वह भी रमणियों के चंचल
कटाक्षों से रमने रस लेने के लिए, अन्यथा दूत
का जीवन निरर्थक हो जायेगा। यदि विरहिणी की
व्यथा और विरही के सन्देश को भूलकर जो संभव
नहीं, मेघदूत को पढ़े तो निश्चित ही यह
गीतकाव्य विश्व साहित्य में अद्वितीय है।

Keywords: मेघ, यक्ष, यक्षिणी , विरहिणी , अलकापुरी

महाकवि कालिदास के मेघदूत का यक्ष अपने राजकार्य में प्रमाद कर बैठा। फलतः राजदण्ड अनिवार्य था। यक्षों के राजा कुबेर ने प्रमादी यक्ष को एक वर्ष के लिए अलका से निर्वासित कर दिया। उसे प्रमाद हेतु
प्रियतमा से वियुक्त होने का दण्ड मिला। वियोगी निर्वासित यक्ष सात मास किसी प्रकार से रामगिरि पर बिता लेता है। आठवें मास में आषाढ़ के प्रथम दिन रामगिरि पर उमड़ते - घुमड़ते बादलों के मोहक विलास ने बैचारे दुर्दिन को स्मर -सन्ताप को ऐसा उद्दीपक
बनाया कि विवश विरही की घनीभूत वेदना विगलित हो उठी। कुबेर का दण्डित दास छटपटा उठता है। ये काले -काले बादल तो विरहिणी प्रियतमा के काल बन जाएंगे , इसके वाष्प जल तो जहर हो
जाएंगे , क्या किया जाए। इस उधेड़ -बुन में
आषाढ़ी कृष्ण प्रतिपदा से आषाढ़ी शुक्ल दशमी तक 25 दिन अन्तर्द्वंद में बीत गए। उसे कुछ भी नहीं सूझ रहा था, डूबते को तिनका भी न मिला। विरही यक्ष की प्रेम समाधि लग जाती है, फिर क्या था, ये काले बादल ही शरण हो जाते हैं।
विरही ने मेघ से सन्देश ले जाने की याचना की। यदि मेघ का सविलास दर्शन न होता तो जैसे सात मास बिताए , वैसे ही आगे के मास भी बीत जाते। बिरही केवल अपनी वेदना के कारण ही ‘प्रकृति
कृपण ’ नहीं हुआ, बल्कि उसने अपनी वेदना के बल से अपनी प्रिया की दुरावस्था का संवेदन
किया। यक्ष ने सोचा कि यह मेघ उत्तर की ओर जा रहा है, अलका को तो जाएगा ही, इसी से क्यों न ‘ स्वकुशलमय ’ प्रियोदन्त ले जाने की याचना की जाए और फिर क्या था, सन्देश की भूमिका तैयार करके विरही यक्ष मेघ से सीधे अलका न जाकर मध्यदेश (वक्रदिशा ) के मार्ग से गमन करने को कहता है।

मुख्य प्रश्न यह है कि कालिदास ने मेघ को
उज्जयिनी और दशपुर की ओर क्यों मोड़ा। अलका
सरल पथ पर जाने के बजाय (वक्रः पंथाः )
उज्जयिनी पथ की ओर मुड़ जाता है। यह है राम और
यक्ष के विरह वेदना का आकाश -पाताल जैसा
अन्तर। यह सब वक्रीकरण भी परकीय रमणियों के
कटाक्ष विलास के यौवन माधुर्य रस से अपने
संतप्त जीवन को सुसिंचित कर कृतार्थ करने के
लिए। यह है यक्ष के अनन्य प्रेम जनित कृपणता
का रहस्य ।

सीधा सा सवाल उठता है, कि यक्ष के इस रम्यरति
का, प्रेम की अनन्यता से, कृपणता से, संदेश को
अतिशीघ्र भेजने की उत्कंठा से, विरहिणी के
कुसुम कमनीय अतः सद्यः पाति हृदय के अवलम्बन
से क्या सम्बन्ध ? रास्ते की थकावट दूर करने
के लिए वह श्रंगार विलास के रमणीय स्थलों में
ही क्यों विश्राम करता है ? मेघ माल नामक

पठारी 1 क्षेत्र पर विश्राम नहीं करेगा,
क्योंकि वहां तो गवांरिन रहती हैं जिनमें
भौहों का मादक विलास , कटाक्ष आदि श्रृंगारिक
हाव -भाव है ही नहीं, किन्तु वह आम्रकूट नामक
गिरिशिखर को देखते ही थक जाता है, वहां
विश्राम करना चाहता है, क्योंकि उसके शिखरों
में उसे पृथिवी कामिनी के कठोर और उन्नत
उरोजों का उपमान मिलता है।

मध्येश्यामः स्तन इव भुवः

शेषविस्तारपाण्डुः 2

स्पष्ट है, मार्ग विश्राम एक बहाना है, उरोजों
पर शयन करने के लिए विलासी अतः मचल उठने वाले
अपने मन को रतिरस देने के लिए, मेघ आम्रकूट के
ऐसे कुंजों में जाएगा जहां वनचारियों ने
मिलन किया हो -

स्थित्वा तस्मिन्

वनचरवधूभुक्तकुञ्जे मुहूर्तम् 3

वहां वह ठहरेगा , चाहे थोड़ी देर के लिए ही
क्यों न ठहरे पर उन कुन्जों में जाएगा ,
ठहरेगा। दशार्थ विदिशा के परिसर प्रदेश की

मोहकता 4 का वर्णन करके भी वह वहां ठहरने की
बात नहीं करता लेकिन गिरिपर्वत पर विशेष रूप
से विश्राम के लिए अधिवास करता है। क्या
विश्राम के लिए अन्य शान्त सुन्दर सुगंधित
स्थान नहीं ? बात यह है कि यहां स्त्रियों के
विलास का परिमल परितः फैल रहा है। केतकी
कुसुम के परिमल और जम्बू कुन्जों की सुगन्धि ,
महाकवि के यात्रा खेद को बिल्कुल दूर नहीं
करते, किन्तु गिरिपर्वत की स्त्रियों के

विलास का परिमल पूर्णरूप से न केवल अध्वश्रम 5
दूर करते हैं, उसे मानसिक सन्तोष भी प्रदान
करते हैं।

कहना इतना है कि जिन्होंने मित्र के काम को
अपने हाथ में लिया है उन्हें सुस्ताने तक का
भी अवकाश कहां ? केवल सुग्रीव ने राम का काम
अपने ऊपर लेकर भी ढील ढाल की थी, दूसरी ओर
हनुमान ने मैनाक के विश्राम के लिए
प्रार्थना करने पर भी यही कहा - “राम काज किए
बिनु मोहि कहां विश्रामा ”

स्पष्ट है थकावट दूर करना, मात्र एक बहाना है।
उसे तो यौवन का उद्दाम विलास देखना है।
उज्जयिनी में भी मेघ दो स्थानों पर रुकता है।
प्रथम तो वधुओं की हर्म्य स्थलियाँ है, जहां
उनके लाक्षारजित चरणचिन्ह अंकित हैं, जिन पर
मानो कामदेव ने पुष्पांजली प्रसादनार्थ
अर्पित किया है, और इसलिए ये रम्य स्थलियाँ
कुसुम सुरभि से गमक रही हैं। ऐसी रम्य

हर्म्यों में ही उसकी थकावट दूर होती है। 6

5

दूसरा महाकाल मंदिर में भी वह सांय संध्या के
बहाने निर्दय संभुक्त अतः नखपदों से युक्त ,
सविलास चँवर डुलाने वाली स्त्रियों के
भ्रमरों की दीर्घ रेखा सदृश कटाक्षों के लिए

जाता है। 7

इतना ही नहीं विरही यक्ष मेघ को शीघ्र सन्देश
देने के बजाय, कैलाश मानस के सम्यक भोग का
निर्देश देता है। आखिर मेघ कैलाश पर क्रीड़ा
क्यों करता है ? उसे मानस सरोवर के जलपान की
क्या जरूरत थी ? मेघ को ऐरावत के मुख पर झालर
प्रदान कर प्रसन्न करने की, शिवगिरि पर
स्वच्छंद समुपभोग और विहार करने की जरुरत
क्या थी,

8 उसके पास कहां समय है ? क्या उस
प्रियतमा के प्राणों की तनिक भी परवाह नहीं ?
क्या उसके अनन्य प्रेम को इस प्रकार दण्डित
करना ही प्रियतम का धर्म है ? यह विरहिणी के
प्रति अन्याय है। सतीत्व पर क्रूर उपहास है।

महाकवि स्वयं कहता भी है कि मेघ, प्रवासी
प्रियतम में त्वरा भर देता है, उसे केवल
प्रियतमा से मिलने के अलावा कुछ भी नहीं
सूझता , थक कर भी विश्राम नहीं करता, आगे बढ़ता
ही जाता है।

यो वृन्दानि त्वरयति पथि श्राम्यतां

प्रोषितानाम् 9

किन्तु यक्ष मेघ को ऐसे रास्ते पर ले जाता है,
जहां श्रृंगारिक विलास हो, वह ऐसी जगह रुकता
है, जहां रतिरास हो ।

यक्ष में अनन्यता नहीं है। वह न केवल
श्रृंगारिक सौन्दर्य की ओर खिंचता है अपितु
नैसर्गिक रमणीयता में भी रमने लगता है, और कभी
व्यर्थ के काम में उलझ जाता है। उछल कूद मचाने
वाले शरभों से भिड़ने की क्या जरूरत थी,

10

6

रास्ते चलते क्यों मुसीबत लेना। आ बेल मुझे
मार। उसे प्यास नहीं लेकिन वह रतिरस लेने के
लिए नदियों पर उतरता है । एक विरही दूसरे विरह
संतप्त जन के साथ संवेदना करे, यह तो समझ में
आता है, लेकिन एक अनन्य विरही , अपनी विरहिणी
को भूलकर , रास्ते के श्रृंगारिक विलासों में
विलम्ब करे, मिलन करने लगे, यह असंगत है। नदी,
नायिकाओं के रसपान के ब्याज से स्वयं क्यों
परकीय नारियों में रमता है ? यक्ष तो मस्त
वायु में ही झूमने लगता है। वर्षा की प्रथम
बूंद के संपर्क से जमीन में सोंधी -सोंधी सी
महक निकलती है, हाथी अपनी सूंढ से, आवाज करते
हुए ऐसी सोंधी वायु को पीते हैं और यह ‘कृपण ’
विरहिणी की उपेक्षा करके ऐसी वायु के झोंकों

में झूमने लगता है। 11 ऐसी वायु के वर्णन का
विरह वेदना से क्या सम्बन्ध , इतना समय कहीं
हनुमानजी विलंब करते तो रामानुज का क्या
होता। इसका तो एक सच्चे दूत को ध्यान रखना ही
चाहिए।

हमें तो बड़ा आश्चर्य है कि कालिदास ने ऐसे
विलासी को विरही कैसे माना ? हनुमानजी ने जब
माता सीता को अशोक वाटिका में देखा तो उन्हें
राम पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे ऐसी विरह
व्यथिता सुन्दरी सीता के बिना जीवित कैसे रह
गए -

दुष्करं कुरुते रामो हीनो यदनया
प्रभुः।
धारयत्यात्मनो देहं न दुःखेनावसीदति॥
12

जबकि राम इतने विरह व्यथित थे कि उन्हें
विश्वविरति थी। सीता के विरह में उन्हें न
केवल भूलोक के सौन्दर्य -विलास से वैराग्य हो
गया था अपितु स्वर्ग के सुख विलास से भी

विरक्ति हो गई थी -

पतित्वममराणां हि पृथिव्याश्चापि
लक्ष्मण।
तां बिना तपनीयाभां नेच्छेयं

जनकात्मजाम्॥ 13

इसके विपरीत तथाकथित यक्ष -मेघ कृपण की
विलासिता देखकर यदि महाकवि की संस्कृति पर सन्देह और आश्चर्य होता है, तो उचित ही है।

प्रेम की अनन्यता के अभाव का यह प्रमाण ही है कि प्रकृति , विरह के सन्ताप से अनुतप्त नहीं, अलका में संवेदना नहीं अपितु सर्वत्र उल्लास है। जब विरह व्यापक नहीं तब स्पष्ट है कि उस विरह में जलन नहीं, तीव्रता नहीं, प्रेम में प्रगाढ़ता नहीं । प्रेम जितना ही गाढ़ा होगा विरह उतना ही तीव्र और व्यापक होगा, परिवेश
उतना ही अधिक प्रभावित होगा, लेकिन यक्ष के और विरहिणी के दोनों परिवेश पर दोनों के विरह का तनिक भी प्रभाव नहीं है। सूरदास ने गोपीविरह
का प्रभाव चारों ओर दिखाया है -

ऊधो! यहि व्रज विरह वढ़यो
घर वाहर सरिता वन उपवन वल्ली द्रुमन

चढ़यो। 14

यक्ष मेघ से केवल वक्र पथ पर जाने का निवेदन
ही नहीं करता, अपितु उधर न जाने पर मेघ के जीवन की व्यर्थता का मानो शाप भी देता है -

वंचितोऽसि। 15 जिसकी याद में एक विरहिणी तिल तिलकर गल रही हो, वह प्रियतम , परकीया के कटाक्षों में रमण करे और उस रमण के लिए
स्वकीया की उपेक्षा कर के वक्र पथ अपनावे , किसी भी मानदण्ड से संगत नहीं। उज्जयिनी का वर्णन स्वतः उत्तम है किन्तु मेघ की भाव - भूमिका की दृष्टि से असंगत ही नहीं वर्जनीय

भी है। मेघ को विदिशा से सीधे अलकापुरी भेजना
था, उस पथ पर भी निसर्ग सौन्दर्य था। उज्जयिनी
भेजना ‘त्वत्प्रयाणानुरूपम् ’ अपने इस
प्रतिज्ञा के भी विरुद्ध है, जो चरित्र
शैथिल्य का प्रमाण है।

उज्जयिनी कालिदास की जन्म भूमि या मातृभूमि
न थी, अपितु विहार भूमि थी। यदि उज्जयिनी उसकी
मातृभूमि होती तो कटाक्ष रमण के बजाय पूज्या -

पूज्या 16 (पूज्यपूजा व्यतिक्रम - अर्थात
पूजनीय की पूजा में मर्यादा का उल्लंघन
कल्याण के लिये बाधक सिद्ध होता है।) का तर्क
देते, क्षिप्रा गन्धवती का वर्णन सरयू की तरह

माता 17 के रूप में करते, न कि श्रृंगारिक रूप
से और उज्जयिनी वर्णन के प्रसंग और गुरुजनों
को प्रणाम अवश्य करते, क्योंकि कालिदास
भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ उद्गाता थे। वे
गुरुजनों के प्रति उपेक्षा और कृतध्नता का
पाप कर नहीं सकते थे ।

पुनश्च , यदि मार्गस्थ विरामों को किसी
प्रकार से संगत मान भी लें तो मार्ग से हटकर
विलास करने का औचित्य तो किसी प्रकार से हो
नहीं सकता। उज्जयिनी और दशपुर में विहार और
विलास न केवल अत्यन्त अप्रासंगिक है, अपितु
संस्कृति और साहित्य उदात्तप्रेम और काव्य -
रस उभयमानों से भयंकर प्रमाद हैं। कहां एक और
प्रियतम के विरह में पल -पल गलने वाली विरहिणी
और कहां दूसरी ओर मार्ग में और अमार्ग में भी
जाकर विलासिनियों के सुख सौन्दर्य में ऐसा
डूबने वाला प्रियतम की अभागी विरहिणी को भूल
सा जाए। विषयागत प्रसंग मेघदूत में लिखे 10
श्लोक 27 से 38 तक 28 व 29 को छोड़कर ऐसे हैं, जिनका
विरह सन्देश से, विरहिणी वेदना से या यक्ष
वेदना से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है।
श्रृंगार लक्ष्मी से मोहित होकर, उसकी

ललनाओं के सलील, लोल, लोचनों से खिंचकर ,
कामनियों और अभिसारिकाओं के मादक गोपनीय गति
विलासों से लुब्ध होकर ‘प्रियतम इव ’ मन्दमोहक
संचार को यादकर ललित वनिताओं के लाक्षारंजित
पादों के कलात्मक अंकों के दर्शन के
पिपासावेग को संवरण न कर अपनी “जीवितं मे
द्वितीयम् ”

18 की उपेक्षा कर बैठता है,
व्यभिचारीवत हो जाता है, मानों मूर्छित और
मरणासन्न स्वजन को भूलकर संजीवनहारी , किसी
अनपेक्ष्य लोभ से, किसी दूसरी तरफ जाकर
रंगरेलियों में रमने लगा। यदि हनुमान जी ऐसा
करने लगते तो क्या उन्हें महान भक्त मान सकते
थे, क्या यह दोष न होता ? यदि यक्ष ऐसा करता है
तो क्या उसके प्रेम को महान उदात्त कह सकते
हैं ? क्या ऐसे नायक को धीर और उदात्त कह सकते
हैं ? प्रकृति सुन्दरी और नगर सुन्दरियों से
खिचकर विरह में जलती एक पत्नी के प्राणों की
उपेक्षा करना उदात्त नहीं है, कामानल की चिता
में बैठकर प्रियतम का ध्यान करती, उसी का नाम
जपती जलती स्वकीया की उपेक्षा कर के परकीया
के सौन्दर्य रस पान के बिना जीवन को वंचित
समझना धैर्य नहीं है। क्या यक्ष की यह
मनोवृत्ति मेघदूत की मूल भावना से मेल खाती
है ? क्या यह “जीवितं मे द्वितीयम् ” के जीवन के
साथ खिलवाड़ नहीं है, धोखा नहीं है ? यह मेघदूत
की आधारभूत भावना का उपहास है। उज्जयिनी मेघ
के स्वभाविक पथ पर नहीं आती । इसलिए महाकवि ने
‘वक्रः पंथाः ’ यद्यपि लिखा है। यहां ‘यद्यपि ’
पर ध्यान दें -

महाकवि कालिदास जानते हैं कि उज्जयिनी
रामगिरि से अलकापुरी के सरलपथ पर नहीं है, वह ‘
त्वत्प्रयाणानुरूप ’ नहीं है। इसीलिए कवि
यद्यपि लिखता है, कि ‘यद्यपि उत्तर की ओर जाने
वाले आपके लिए उज्जयिनी टेढ़े रास्ते पर
पड़ेगी क्योंकि वह पश्चिम की ओर है, तथापि …’

10

[illegible] ”।[19]

[illegible] ?[20] [illegible]

> 21

उसके जीवन धन से अलग कर दिया गया है और बाहर
अलका अपने रागरंग में डूबी है। ऐसे विरुद्ध
और क्रूर वातावरण में वह कैसे जीती है। कैसे सांस लेगी, इस विषमय यथार्थ पर बिना ध्यान दिए महाकवि अपनी श्रृंगार रसिकता के आवेश में अलका का उदात्त (श्रेष्ठ ) वर्णन करता गया।

अलका वर्णन के श्लोकों में शोक की छाया भी नहीं है। यक्ष के साथ एक बार भले ही सहानुभति
न हो, क्योंकि उसने अपने अधिकार का दुरुपयोग
किया है, प्रमाद किया। अतः दण्ड मिलेगा ही किन्तु यक्षिणी ने क्या अपराध किया, उसके साथ अलका की सहानुभूति क्यों न हो ? विरहिणी के साथ अलका की निष्ठुरता उसके श्रृंगार को अनैतिक सिद्ध करती है। स्पष्ट है कि मेघदूत महाकवि कालिदास के ऐसे उदात्त और उद्दीप्त
यौवन की रचना है, जिसमें मन्मथ मर्यादाओं को सहज भूल जाता है, अपने आवेश में सत्पथ से भटक जाता है।

संदर्भ

1. कालिदास कृत, मेघदूत , सम्पा . वासुदेवशरण
अग्रवाल , राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड , दिल्ली , वि.सं. 2040, पूर्व मेघ, श्लोक 46
2. पूर्व मेघ, श्लोक 48
3. पूर्व मेघ, श्लोक 49
4. पूर्व मेघ, श्लोक 23
5. पूर्व मेघ, श्लोक 25
6. पूर्व मेघ, श्लोक 32
7. पूर्व मेघ, श्लोक 35
8. पूर्व मेघ, श्लोक 62
9. उत्तर मेघ, श्लोक 36
10. पूर्व मेघ, श्लोक 54

11. पूर्व मेघ, श्लोक 42
12. श्रीमद्वाल्मीकि रामायणम् , मु.रा. सुन्दरेश शास्त्रिणा , कलकत्ता , 1959, सुन्दरकाण्ड , एकादशः सर्गः , श्लोक 50, पृ. 398

13. अरण्यकाण्ड , एकोनचत्वारिंशः सर्गः , श्लोक 5, पृ. 280
14. महाकवि सूरदास विरचित , भ्रमर गीत सार, सम्पा . माया अग्रवाल , कलामन्दिर प्रकाशक
एवं पुस्तक विक्रेता , नई दिल्ली , 1977,
प्रथम संस्करण , पृ. 20
15. पूर्व मेघ, श्लोक 27
16. कालिदास कृत, रघुवंश , कालिदास ग्रन्थावली
, सीताराम चतुर्वेदी , अखिल भारतीय विक्रम
परिषद , काशी, वि.सं. 2007, प्रथम सर्ग, श्लोक 79, पृ. 40
17. रघुवंश , त्रयोदशः सर्गः , श्लोक 62-63, पृ. 444
18. मेघदूत , उत्तर मेघ, श्लोक 20
19. वेदव्यास कृत, श्रीमद्भगवद्गीता , अध्याय
2, श्लोक 50
20. अभिज्ञान शाकुन्तलम् , षष्ठोऽङ्कः , श्लोक 8, पृ. 408 (कालिदास ग्रन्थावली )
21. रघुवंश , अष्टमः सर्गः , श्लोक 69, पृ. 88